अध्याय
12

औपनिवेशिक शहर

सीखने के प्रतिफल- इस अध्याय में छात्र भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया एवं नगरों के नगरीकरण योजना एवं स्थापत्य को समझेंगे।

औपनिवेशिक शहर

इस अध्याय में औपनिवेशिक भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया पर चर्चा करेंगे नगरों के नगरीकरण नगर योजना एवं स्थापत्य को समझेंगे! शहरों में होने वाले सामाजिक परिवर्तन को देखेंगे मद्रास कोलकाता तथा बम्बई के विकास क्रम को गहनता से समझेंगे! यह शहर मक्का से ग्रहण तथा बुनाई गांव से व्यापारिक केंद्रों तक कैसे पहुंचे!

ग्रामीण इलाके एवं गांवों के लोग खेती जंगलों से संग्रहण या पशुपालन के द्वारा जीवन निर्वहन करते थे।

कस्बों में शिल्पकार, व्यापारिक, प्रशासक तथा शासक वर्ग रहते थे।

अकाल के समय ग्रामीण लोग कस्बों में जमा हो जाते थे।

जब कस्बों पर आक्रमण होते थे तो ग्रामीण लोग। अक्सर गांव में शरण लेते थे।

व्यापारी और फेरीवाले कस्बों से माल गांव है ले जाकर बेचते थे।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

आगरा दिल्ली लाहौर शहर 16 वीं और 17 वीं शताब्दी में मुगल सत्ता और संस्कृति के प्रमुख केंद्र थे।

यहां मनसबदार जागीरदार और अन्य प्रशासक वर्ग व्यापारी के साथ रहते थे।

दक्षिण भारत के नगरों जैसे मदुरई और कांचीपुरम में मुख्य केंद्र मंदिर होता था।

यह नगर महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र भी थे।

इनका ऐतिहासिक महत्व है!

18 वीं शताब्दी के परिवर्तन।

- पुराने नगर का पतन नए नगर का उत्थान। इसी समय पुर्तगालियों ने 1510 में पणजी गोवा डचो ने 1605 मे मछलीपट्टनम अंग्रेजों ने 1639 में मद्रास तथा फ्रांसीसीयों ने 1673 में पांडिचेरी में व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार किया जिसमें नए नगर बसे।
- यह सब 18 वीं शताब्दी में बढ़ने लगा मुगल सत्ता के कमजोर होने से दिल्ली और आगरा ने अपना राजनीतिक प्रभुत्व खो दिया।

जनगणना।

- शहरों के फैलाओ पर नजर रखने के लिए नियमित रूप से लोगों की गिनती की जाती थी।
- अखिल भारतीय जनगणना का प्रथम प्रयास 18 72 में गवर्नर जनरल लॉर्ड मेयो के समय किया गया।
- प्रथम नियमित जनगणना 1881 ईसवी में गवर्नर जनरल लॉर्ड रिपन के समय की गई यह प्रथम दशकीय जनगणना थी।
  जनगणना से प्राप्त आंकड़ों की विश्वसनीयता।
- यह आंकड़े भ्रामक भी हो सकते हैं।
- जनगणना आयुक्तों ने आबादी के विभिन्न तबकों का वर्गीकरण करने के लिए अलग-अलग श्रेणियों बना दी थी जैसे। - ऐसे व्यक्ति को किस श्रेणी में रखा जाएगा जो कारीगर भी था और व्यापारी भी।
- जो व्यक्ति खेती भी करता था और उपज को शहर में ले जाकर बेचता भी था।
- कई बार लोग खुद जनगणना आयुक्त को गलत जवाब देते थे जिसमें वह लोग घर की औरतों की जानकारी देने से हिचकीचाते थे।
- मृत्यु दर और बीमारियों से संबंधित आंकड़ों को इकट्ठा करना असंभव था।

© JCERT not to be republished

मध्य 18वीं शताब्दी से परिवर्तन।

1757 में प्लासी के युद्ध के बाद जैसे-जैसे अंग्रेजों ने राजनीतिक नियंत्रण हासिल किया मद्रास कलकत्ता तथा बम्बई जैसे बंदरगाह नगरों का भी नई आर्थिक राजधानी के रूप में उनका उदय हुआ।

बदलाव के रुझान।

- जनगणनाओं का सावधानी से अध्ययन करने पर कुछ दिलचस्प रुझान सामने आते हैं।
- कस्बों का विकास ज्यादा नहीं हो पाया और दूसरी तरफ कोलकाता मुंबई और मद्रास भी फैले और जल्दी से विशाल शहर बन गए।
- 1853 ईसवी में भारत में रेलवे की शुरुआत के बाद कई शहरों की कायापलट हो गई।
- भारत में प्रथम रेल मुंबई से ठाणे तक चली।

बंदरगाह किले और सेवाओं के केंद्र।

- 18वीं सदी तक मद्रास कलकत्ता और बम्बई महत्वपूर्ण बंदरगाह बन चुके थे।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने कारखानों और बस्तियों की सुरक्षा के उद्देश्य से किलेबंदी की।
- मद्रास में फोर्ट सेंट जॉर्ज।
- कोलकाता में फोर्ट विलियम।
- मुंबई में फोर्ट।
- व्हाइट टाउन। गोरा शहर यूरोपियों की बस्तिया।
- ब्लैक टाउन काला शहर भारतीयों की बस्तियां।
- कोलकाता मुंबई और मद्रास से ब्रिटिश कारखानों के लिए कच्चा माल भेजा जाता था।

तीन बड़े शहर

- हम 3 बड़े शहरों कलकत्ता मद्रास तथा बम्बई के विकास को गहनता से देखने से प्रतीत होता है कि तीनों शहर मत्स्य ग्रहण तथा बुनाई के गांव थे!
- इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक गतिविधियों के कारण यह तीनों शहर महत्वपूर्ण केंद्र बन गया!
- कंपनी के एजेंट 1639ई0 में मद्रास तथा 1690 ई0 में कलकत्ता में बस गए!

© JCERT not to be republished

ब्रिटिश सरकार ने विस्तृत रिकॉर्ड रखा, नियमित सर्वेक्षण किया, सांख्यिकीय डेटा एकत्र किया और अपने व्यापारिक मामलों को विनियमित करने के लिए अपनी व्यापारिक गतिविधियों के आधिकारिक रिकॉर्ड प्रकाशित किए।

औपनिवेशिक रिकॉर्ड

ब्रिटिशों ने भी मानचित्रण शुरू कर दिया क्योंकि उनका मानना था कि नक्शे परिदृश्य स्थलाकृति को समझने, विकास की योजना बनाने, सुरक्षा बनाए रखने और वाणिज्यिक गतिविधियों की संभावनाओं को समझने में मदद करते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ब्रिटिश सरकार ने भारतीय प्रतिनिधियों को शहरों में बुनियादी सेवाओं के संचालन के लिए निर्वाचित करने के लिए जिम्मेदारियां देनी शुरू कर दी और इसने नगरपालिका करों का एक व्यवस्थित वार्षिक संग्रह शुरू किया।

अखिल भारतीय जनगणना का पहला प्रयास 1872 ई० में किया गया। इसके बाद 1881 ई . से दशकीय (प्रत्येक 10 वर्ष में होने वाली) जनगणना एक नियमित व्यवस्था बन गई। जिससे शहरों में जलापूर्ति, निकासी, सड़क निर्माण, स्वास्थ्य व्यवस्था तथा जनसंख्या के फैलाव पर नियंत्रण किया जा सके तथा वार्षिक नगरपालिका कर वसूला जा सकें।

कई बार स्थानीय लोगों द्वारा मृत्यु दर, बीमारी, बीमारी के बारे में गलत जानकारी दी गई। हमेशा ये रिपोर्ट नहीं की जाती थीं। कभी कभी ब्रिटिश सरकार द्वारा रखी गई रिपोर्ट और रिकॉर्ड भी पक्षपातपूर्ण थे। हालांकि, अस्पष्टता और पूर्वाग्रह के बावजूद, इन अभिलेखों और आंकड़ों ने औपनिवेशिक शहरों के बारे में अध्ययन करने में मदद की।

उत्तर औपनिवेशिक शहरों में रिकॉर्ड्स संभालकर रखने के कारण

आंकड़े और जानकारियों के आधार पर शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए।

व्यापारिक गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा व्यापार को कुशलता से प्रोन्नत करने के लिए।

शहरों के विस्तार के साथ शहरी नागरिकों के रहन — सहन, आचार — विचार, शैक्षिक जागरूकता, राजनीतिक रूझान आदि का अध्ययन करने के लिए।

किसी स्थान की भौगोलिक बनावट और भू — दृश्यों को भलीभाँति समझने के बाद उन स्थानों पर शहरीकरण, साम्राज्य विस्तार आदि करने के लिए।

जनसंख्या के आकार में होने वाली सामाजिक बढ़ोत्तरी का अध्ययन करके उसके अनुसार प्रशासनिक तौर — तरीकों, नियम — कानूनों आदि को बनाने तथा उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए।

© JCERT not to be republished

आँकड़े एकत्रित करने में कठिनाइयाँ

- लोग सही जानकारी देने को तैयार नहीं थे।
- मृत्यु दर और बीमारियों के आंकड़े एकत्र करना मुश्किल था।

  नोट :- बंदरगाह : — मद्रास, बॉम्बे और कलकत्ता

  किले : — मद्रास में सेंट जॉर्ज और कलकत्ता में फोर्ट विलियम।

तीन बड़े शहर

- हम 3 बड़े शहरों कलकत्ता मद्रास तथा बम्बई के विकास को गहनता से देखने से प्रतीत होता है कि तीनों शहर मत्स्य ग्रहण तथा बुनाई के गांव थे!
- इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक गतिविधियों के कारण यह तीनों शहर महत्वपूर्ण केंद्र बन गया!
- कंपनी के एजेंट 1639ई0 में मद्रास तथा 1690 ई0 में कलकत्ता में बस गए!

औपनिवेशिक संदर्भ में शहरीकरण के पुनर्निर्माण को समझने में जनगणना के आंकड़े किस हद तक उपयोगी हैं ?

- ये डेटा जनसंख्या की सही संख्या के साथ — साथ श्वेत और अश्वेतों की कुल जनसंख्या जानने के लिए उपयोगी हैं।
- ये आंकड़े हमें यह भी बताते हैं कि भयानक या घातक बीमारियों से लोगों की कुल संख्या या कुल आबादी किस हद तक प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई है।
- जनगणना के आंकड़े हमें विभिन्न समुदायों की कुल संख्या, उनकी भाषा, उनके कार्यों और आजीविका के साधनों के साथ — साथ उनकी जाति और धर्म के बारे में भी पूरी जानकारी प्रदान करते हैं।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

व्हाइट और ब्लैक टाउन

औपनिवेशिक शहरों में गोरों (Whites) अर्थात् अंग्रेजों और कालों (Blacks) अर्थात् भारतीयों की अलग — अलग बस्तियाँ होती थीं। उस समय के लेखन में भारतीयों की बस्तियों को " ब्लैक टाउन " और गोरों की बस्तियों को " व्हाइट टाउन " कहा जाता था।

इन शब्दों का प्रयोग नस्ली भेद प्रकट करने के लिए किया जाता था। अंग्रेजों की राजनीतिक सत्ता की मजबूती के साथ ही यह नस्ली भेद भी बढ़ता गया।

इन दोनों बस्तियों के मकानों में भी अंतर होता था। भारतीय एजेंटों और बिचौलियों ने बाजार के आस — पास व्हाइट टाउन में परम्परागत ढंग के दालान मकान बनवाये। सिविल लाइन्स में बँगले होते थे। सुरक्षा के लिए इनके आस — पास छावनियाँ भी बसाई जाती थी।

व्हाइट्स टाउन साफ सुथरे होते थे जबकि ब्लैक टाउन गंदे होते थे। यहाँ बीमारी फैलने का डर होता था। .

ये नस्ली विभेद के पहचान थे!

© JCERT not to be republished

औपनिवेशिक काल में भवननिर्माण

पहली नवशास्त्रीय (नियोक्लासिकल) शैली जिसमें बड़े — बड़े स्तंभों के पीछे रेखागणितीय सरंचना पाई जाती थी। जैसे —बम्बई का टाउन हॉल व एलिफिस्टन सर्कल।

दूसरी शैली नव — गौथिक शैली थी। जिसमें ऊँची उठी हुई छत, नोकदार मेहराब बारीक साज — सज्जा देखने को मिलती है, जैसे सचिवालय, बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई उच्च न्यायालय।

तीसरी शैली थी इंडो — सारासेनिक शैली, जिसमें भारतीय और यूरोपीय शैलियों का मिश्रण था, इसका प्रमुख उदाहरण है : — गेटवे ऑफ इंडिया, बम्बई का ताज होटल।

नए शहरों में सामाजिक जीवन

शहरों में जीवन हमेशा एक प्रवाह में लगता था, अमीर और गरीब के बीच एक बड़ी असमानता थी।

नई परिवहन सुविधाएं जैसे घोड़ा गाड़ी, रेलगाड़ी, बसें विकसित की गई थीं। लोगों ने अब परिवहन के नए मोड का उपयोग करके घर से कार्यस्थल तक की यात्रा शुरू की।

कई सार्वजनिक स्थानों का निर्माण किया गया था, जैसे 20 वीं शताब्दी में सार्वजनिक पार्क, थिएटर, डब और सिनेमा हॉल। इन स्थानों ने सामाजिक संपर्क के मनोरंजन और अवसर प्रदान किया।

लोग शहरों की ओर पलायन करने लगे। क्लर्कों, शिक्षकों, वकीलों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और एकाउंटेंट की मांग थी। स्कूल, कॉलेज और पुस्तकालय थे।

बहस और चर्चा का एक नया सार्वजनिक क्षेत्र उभरा। सामाजिक मानदंडों, रीति — रिवाजों और प्रथाओं पर सवाल उठाए जाने लगे।

उन्होंने नए अवसर प्रदान किये। महिलाओं के लिए अवसर। इसने महिलाओं को अपने घर से बाहर निकलने और सार्वजनिक जीवन में अधिक दिखाई देने का मार्ग प्रदान किया।

उन्होंने शिक्षक, रंगमंच और फिल्म अभिनेत्री, घरेलू कामगार कारखानेदार आदि के रूप में नए पेशे में प्रवेश किया।

मध्यम वर्ग की महिलाओं ने स्वयं को आत्मकथा, पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से व्यक्त करना शुरू कर दिया।

परंपरावादियों को इन सुधारों की आशंका थी, उन्होंने समाज के मौजूदा शासन और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को तोड़ने की आशंका जताई।

जिन महिलाओं को घर से बाहर जाना पड़ा, उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा और वे उन वर्षों में सामाजिक नियंत्रण की वस्तु बन गईं। शहरों में, मजदूरों का एक वर्ग या श्रमिक वर्ग थे।

गरीब अवसर की तलाश में शहरों में आ गए, कुछ लोग जीवन के नए तरीके से जीने और नई चीजों को देखने की इच्छा के लिए शहरों में आए।

शहरों में जीवन महंगा था, नौकरियां अनिश्चित थीं और कभी — कभी प्रवासी पैसे बचाने के लिए अपने परिवार को मूल स्थान पर छोड़ देते थे। प्रवासियों ने तमाशा (लोक रंगमंच) और स्वांग (व्यंग्य) में भी भाग लिया और इस तरह से उन्होंने शहरों के जीवन को एकीकृत करने का प्रयास किया।

शहरों के लोग स्वयं को ज्यादा सभ्य समझते थे।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

हिल स्टेशनों का विकास

- ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटिश सेना की आवश्यकता के कारण शुरू में हिल स्टेशन विकसित करना शुरू किया। गोरखा युद्ध (1815 — 16) के दौरान शिमला (वर्तमान शिमला) की स्थापना हुई।

- आंग्ल — मराठा युद्ध ने माउंट आबू (1818) का विकास किया। दार्जिलिंग को 1835 में सिक्किम के शासक से लिया गया था।

- पहाड़ियों की समशीतोष्ण और ठंडी जलवायु को सैनिटेरियम (वे स्थान जहाँ सैनिकों को आराम और बीमारी से उबरने के लिए भेजा जा सकता है) के रूप में देखा जाता था क्योंकि ये क्षेत्र हैजा, मलेरिया आदि बीमारियों से मुक्त थे।

- पहाडी क्षेत्र और स्टेशन यूरोपीय शासकों और अन्य कलीनों के लिए आकर्षक स्थान बन गए। गर्मियों के मौसम के दौरान मनोरंजन के लिए वे नियमित रूप से इन स्थानों पर जाते थे। कई घरों, इमारतों और चर्चों को यूरोपीय शैली के अनुसार डिजाइन किया गया था।

- बाद में रेलवे के परिचय ने इन स्थानों को अधिक सुगम और उच्च और मध्यम वर्ग के भारतीयों जैसे महाराजा, वकील और व्यापारियों ने भी नियमित रूप से इन स्थानों पर जाना शुरू कर दिया।

- पहाड़ी क्षेत्र भी अर्थव्यवस्था के बारे में महत्वपूर्ण थे क्योंकि चाय बागान, कॉफी बागान इस क्षेत्र में विकसित हुए।

© JCERT not to be republished

मद्रास की बसावट और पृथक्करण

कंपनी ने पहले सूरत में अपना केंद्र स्थापित किया और फिर पू्र्वी तट पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। ब्रिटिश फ्रांसीसी दक्षिण भारत में लड़ाई में लगे थे, लेकिन 1761 में फ्रांस की हार के साथ, मद्रास सुरक्षित हो गया और वाणिज्यिक केंद्र के रूप में विकसित होने लगा।

फोर्ट सेंट जॉर्ज एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया जहां यूरोपीय लोग रहते थे और यह अंग्रेजी पुरुषों के लिए आरक्षित था।

अधिकारियों को भारतीयों से शादी करने की अनुमति नहीं थी। हालांकि, अंग्रेजी डच के अलावा, पुर्तगाली को किले में रहने की अनुमति दी गई थी क्योंकि वे यूरोपीय और ईसाई थे।

मद्रास का विकास गोरों की आवश्यकता के अनुसार किया गया था। काला शहर, भारतीयों का बसना, पहले यह किले के बाहर था लेकिन बाद में इसे स्थानांतरित कर दिया गया था।

न्यू ब्लैक टाउन मंदिर और बाज़ार के आसपास रहने वाले क्वार्टर के साथ पारंपरिक भारतीय शहर जैसा था। जाति विशेष के मोहल्ले थे।

मद्रास का विकास आसपास के कई गांवों को शामिल करके किया गया था। मद्रास शहर ने स्थानीय समुदायों के लिए कई अवसर प्रदान किए।

विभिन्न समुदाय मद्रास शहर में अपनी विशिष्ट नौकरी करते हैं, विभिन्न समुदायों के लोग ब्रिटिश सरकार की नौकरी के लिए। प्रतिस्पर्धा करने लगे।

धीरे — धीरे परिवहन प्रणाली विकसित होने लगी। मद्रास के शहरीकरण का मतलब गांवों के बीच के क्षेत्रों को शहर के भीतर लाना था।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

कलकत्ता में नगर नियोजन

पूरे शहरी अंतरिक्ष और शहरी भूमि उपयोग के नक्से की तैयारी के लिए नगर नियोजन आवश्यक है।

कलकत्ता शहर का विकास सुतानाती, कलकत्ता और गोविंदपुर नामक तीन गाँवों से हुआ था। कंपनी ने गोविंदपुर गाँव की एक साइट को वहाँ एक किले के निर्माण के लिए मंजूरी दे दी।

कलकत्ता में नगर नियोजन धीरे — धीरे फोर्ट विलियम से दूसरे हिस्सों में फैल गई। कलकत्ता के नगर नियोजन में लॉर्ड वेलेजली ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरकार की सहायता से लॉटरी प्लान द्वारा नगर नियोजन के कार्य को आगे बढ़ाया गया। नगर नियोजन के लिए फंड लॉटरी द्वारा उठाए गए थे।

समिति ने कलकत्ता के लिए एक नया नक्शा बनाया, शहर में सड़कें बनाईं और अतिक्रमण के रिवर बैंक को साफ किया। कलकत्ता को स्वच्छ और रोग मुक्त बनाने के लिए कई झोपड़ियों और बस्तियों को विस्थापित किया गया और इन लोगों को कलकत्ता के बाहरी इलाके में स्थानांतरित कर दिया गया।

शहर में बार — बार आग लगने के कारण सख्त भवन नियमन हो गया। छज्जे की छत पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और टाइलों की छत को अनिवार्य कर दिया गया था।

उन्नीस वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शहर में आधिकारिक हस्तक्षेप अधिक कठोर हो गया।

ब्रिटिशों ने अधिक झोपड़ियों को हटा दिया और अन्य क्षेत्रों की कीमत पर शहर के ब्रिटिश हिस्से को विकसित किया।

इन नीतियों ने सफेद शहर और काले शहर के नस्लीय विभाजन को और गहरा कर दिया और स्वस्थ और अस्वस्थ के नए विभाजन में और तेजी आई। धीरे — धीरे इन नीतियों के खिलाफ जनता का विरोध हुआ

भारतीयों में साम्राज्यवाद विरोधी भावना और राष्ट्रवाद को मजबूत किया।

ब्रिटिश चाहते थे कि बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहर ब्रिटिश साम्राज्य की भव्यता और अधिकार का प्रतिनिधित्व करें। नगर नियोजन का उद्देश्य पश्चिमी सौंदर्य विचारों के साथ — साथ उनके सावधानीपूर्वक और तर्कसंगत योजना और निष्पादन का प्रतिनिधित्व करना था।

© JCERT not to be republished

हालांकि, सरकारी भवन मुख्य रूप से रक्षा, प्रशासन और वाणिज्य जैसी कार्यात्मक जरूरतों की सेवा करते हैं, लेकिन वे अक्सर राष्ट्रवाद, धार्मिक महिमा और शक्ति के विचारों का प्रदर्शन करने के लिए होते हैं।

बॉम्बे में वास्तुकला

- बॉम्बे के पास शुरू में सात द्वीप हैं, बाद में यह औपनिवेशिक भारत की वाणिज्यिक राजधानी बन गया और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का केंद्र भी।
- बंबई बंदरगाह मालवा से, सिंध और राजस्थान का विकास हुआ और कई भारतीय व्यापारी भी अमीर हो गए।
- बंबई ने भारतीय पूँजीपति वर्ग का विकास किया जो पारसी, मारवाड़ी, कोंकणी, मुस्लिम, गुजराती, बनिया, बोहरा, यहूदी और आर्मीनियाई जैसे विविध समुदायों से आया।
- कपास की मांग में वृद्धि, अमेरिकी गृहयुद्ध के समय और 1869 में स्वेज नहर के खुलने के दौरान बॉम्बे के आगे आर्थिक विकास हुआ।
- बॉम्बे को भारत के सबसे महत्वपूर्ण शहर में से एक घोषित किया गया था। बंबई में भारतीय व्यापारियों ने सूती मिलों और भवन निर्माण गतिविधियों में निवेश करना शुरू कर दिया।
- कई नई इमारतों का निर्माण किया गया था लेकिन उन्हें यूरोपीय शैली में बनाया गया था। यह सोचा गया था कि यह होगा :
- इस तरह से कॉलोनी में घर पर महसूस करने के लिए, यूरोपीय देश में विदेशी परिदृश्य को परिचित कराएं!

भवन और वास्तुकला शैलियाँ

- आर्किटेक्चर ने उस समय प्रचलित सौंदर्य विचार को प्रतिबिंबित किया, भवन ने उन लोगों की दृष्टि भी व्यक्त की जो उन्हें बनाते हैं!
- स्थापत्य शैली भी स्वाद को ढालती है, शैलियों को लोकप्रिय बनाती है और संस्कृति की आकृति को आकार देती है।
- उन्नीस वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, औपनिवेशिक आदर्श का मुकाबला करने के लिए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्वाद विकसित किए गए थे। सांस्कृतिक संघर्ष की व्यापक प्रक्रियाओं के माध्यम से शैली बदल गई है और विकसित हुई है।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 1853 ई0 में टाउन हॉल कहां बनाया गया था?

(a) दिल्ली (b) मुंबई

(c) कोलकाता (d) मद्रास

Ans-(b)1

2. फोर्ट सेंट जॉर्ज कहां स्थित था?

(a) मुंबई (b) कोलकाता

(c दिल्ली (d) मद्रास

Ans-(d) मद्रास

3. कोलकाता में गवर्नमेंट हाउस जो गवर्नरो का निवास स्थान था किस गवर्नर जनरल ने बनवाया था?

(a) वेलेजली

(b) वारेन हेस्टिंग्स

(c) रिप्पन

(d) लॉर्ड लिटन

Ans-(a)

4. भारत में रेलवे की शुरुआत कब हुई?

(a) 1853 (b) 1553

(c) 1856 (d) 1857

Ans-(a)1853

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. व्हाइट और ब्लैक टाउन शब्दों का क्या महत्व था?

6. औपनिवेशिक शहरीकरण के संदर्भ में जनगणना संबंधी आंकड़े किस हद तक उपयोगी होते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

7. 18वीं सदी में शहरी केंद्रों का रूपांतरण किस तरह हुआ?

8. शहरीकरण से क्या समझते हैं? औपनिवेशिक मद्रास में शहरी और ग्रामीण तत्व किस हद तक घुल मिल गए?

© JCERT not to be republished